BABLY KUMARI
Paper - 01

Dep. of. Education
A.N.D. COLLEGE
Patory

Page No.:
Date : / /

Lect - 29 (B.Ed. First Year)

Topic: Understanding differences based on a rang of congnitive abilities:

संज्ञानात्मक विकास तंत्रिका विज्ञान और मनोविज्ञान का एक अध्ययन क्षेत्र है जिसमें बच्चों द्वारा सूचना परसंस्करण, भाषा शिक्षण सीखने और मस्तिष्क के विकास के अन्य पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है। संज्ञान शब्द का अर्थ होता है जानना या समझना या एक ऐसी बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें विचारों के द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। संज्ञानात्मक विकास शब्द का प्रयोग मानसिक विकास के व्यापक अर्थों में किया जाता है। जिसमें बुद्धि के अलावा सूचना का प्रत्यक्षीकरण, पहचान, प्रत्यवान और व्याख्या आते हैं। ऐसे बच्चों को जिनमें बौद्धिक न्यूनता होती है उन्हें बौद्धिक रूप से अशक्त कहा जाता है। बौद्धिक अशक्तता वाले बच्चों की बुद्धि लब्धि में भी व्यक्ति विभिन्नता पाई जाती है।

Page No.:
Date : / /

अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ मेंटल डिफिशेन्सि के अनुसार बौद्धिक अशक्त से तात्पर्य असामान्य साधारण बौद्धिक प्रकार्यात्मकता से है जो व्यक्ति की विकासात्मक अवस्थाओं में प्रकट होती है तथा उसके अनुकूलित व्यवहार में न्यूनता से संबंधित होती है। इस परिभाषा की तीन मूल विशेषता है। पहली किसी व्यक्ति को बौद्धिक रूप से अशक्त कहलाने के लिए उसकी बौद्धिक प्रकार्यात्मकता सामान्य स्तर से कम हो। जिन व्यक्तियों की बुद्धि लब्धि 70 से कम होती है उनकी सामान्य से कम बौद्धिकता समझी जाती है। दूसरी विशेषता का संबंध अनुकूलित व्यवहार में न्यूनता से है। अनुकूलित व्यवहार का अर्थ व्यक्ति की उस क्षमता से है जिसके द्वारा वह आत्म निर्भर बनता है और अपने पर्यावरण से प्रभावी ढंग से अपना समायोजन करता है। तीसरी विशेषता यह है कि बौद्धिक अशक्तता व्यक्ति की विकासात्मक अवस्था 0 से 18 वर्ष में ही दिखाई पड़ जाती है।